उत्पत्ति

(सृष्टि का वर्णन)

१ आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। २ और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था: तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था। ३ तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो: तो उजियाला हो गया। ४ और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है; और परमेश्वर ने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया। ५ और परमेश्वर ने उजियाले को दिन और अन्धियारे को रात कहा। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहिला दिन हो गया॥

६ फिर परमेश्वर ने कहा, जल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए। ७ तब परमेश्वर ने एक अन्तर करके उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग अलग किया; और वैसा ही हो गया। ८ और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन हो गया॥

९ फिर परमेश्वर ने कहा, आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे; और वैसा ही हो गया। १० और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा; तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको उस ने समुद्र कहा: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। ११ फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से हरी घास, तथा बीजवाले छोटे छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्हीं में एक एक की जाति के अनुसार होते हैं पृथ्वी पर उगें; और वैसा ही हो गया। १२ तो पृथ्वी से हरी घास, और छोटे छोटे पेड़ जिन में अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज होता है, और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं उगे: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। १३ तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन हो गया॥

१४ फिर परमेश्वर ने कहा, दिन को रात से अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियां हों; और वे चिन्हों, और नियत समयों, और दिनों, और वर्षों के कारण हों। १५ और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में पृथ्वी पर प्रकाश देनेवाली भी ठहरें; और वैसा ही हो गया। १६ तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाईं; उन में से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिये, और छोटी ज्योति को रात पर प्रभुता करने के लिये बनाया: और तारागण को भी बनाया। १७ परमेश्वर ने उनको आकाश के अन्तर में इसलिये रखा कि वे पृथ्वी पर प्रकाश दें, १८ तथा दिन और रात पर प्रभुता करें और उजियाले को अन्धियारे से अलग करें: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। १९ तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार चौथा दिन हो गया॥

२० फिर परमेश्वर ने कहा, जल
जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए,
और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश के
अन्तर में उड़ें। २१ इसलिये परमेश्वर ने
जाति जाति के बड़े बड़े जल-जन्तुओं की,
और उन सब जीवित प्राणियों की भी
सृष्टि की जो चलते फिरते हैं जिन से
जल बहुत ही भर गया और एक एक
जाति के उड़नेवाले पक्षियों की भी सृष्टि
की: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
२२ और परमेश्वर ने यह कहके उनको
आशीष दी, कि फूलो-फलो, और समुद्र के
जल में भर जाओ, और पक्षी पृथ्वी पर
बढ़ें। २३ तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ।
इस प्रकार पांचवां दिन हो गया॥

२४ फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से
एक एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात्
घरेलू पशु, और रेंगनेवाले जन्तु, और
पृथ्वी के वनपशु, जाति जाति के अनुसार
उत्पन्न हों; और वैसा ही हो गया। २५ सो
परमेश्वर ने पृथ्वी के जाति जाति के वन-
पशुओं को, और जाति जाति के घरेलू पशुओं
को, और जाति जाति के भूमि पर सब रेंगने-
वाले जन्तुओं को बनाया: और परमेश्वर
ने देखा कि अच्छा है। २६ फिर परमेश्वर
ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के
अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और
वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के
पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी
पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर
जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।
२७ तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने
स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही
स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको
उत्पन्न किया, नर और नारी करके उस ने
मनुष्यों की सृष्टि की। २८ और परमेश्वर
ने उनको आशीष दी: और उन से कहा,
फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और
उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र
की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों,
और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर
अधिकार रखो। २९ फिर परमेश्वर ने
उन से कहा, सुनो, जितने बीजवाले छोटे
छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने
वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं, वे सब मैं
ने तुम को दिए हैं; वे तुम्हारे भोजन के
लिये हैं: ३० और जितने पृथ्वी के पशु,
और आकाश के पक्षी, और पृथ्वी पर
रेंगनेवाले जन्तु हैं, जिन में जीवन के प्राण
हैं, उन सब के खाने के लिये मैं ने सब हरे
हरे छोटे पेड़ दिए हैं; और वैसा ही हो
गया। ३१ तब परमेश्वर ने जो कुछ
बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा,
कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा सांझ हुई
फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवां दिन
हो गया॥

२ यों आकाश और पृथ्वी और उनकी
सारी सेना का बनाना समाप्त हो
गया। २ और परमेश्वर ने अपना काम
जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त
किया। और उस ने अपने किए हुए सारे
काम से सातवें दिन विश्राम किया।
३ और परमेश्वर ने सातवें दिन को
आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि
उस में उस ने अपनी सृष्टि की रचना के
सारे काम से विश्राम लिया॥

(मनुष्य की उत्पत्ति)

४ आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का
वृत्तान्त * यह है कि जब वे उत्पन्न हुए

* मूल में—की वंशावली।

अर्थात् जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया : ५ तब मैदान का कोई पौधा भूमि पर न था, और न मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा था, क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी पर जल नहीं बरसाया था, और भूमि पर खेती करने के लिये मनुष्य भी नहीं था; ६ तौभी कुहरा पृथ्वी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी। ७ और यहोवा परमेश्वर ने आदम * को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम * जीवता प्राणी बन गया। ८ और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन देश में एक बाटिका लगाई; और वहां आदम * को जिसे उस ने रचा था, रख दिया। ९ और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं उगाए, और बाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी उगाया। १० और उस बाटिका को सींचने के लिये एक महानदी अदन से निकली और वहां से आगे बहकर चार धारा † में हो गई। ११ पहिली धारा का नाम पीशोन् है, यह वही है जो हवीला नाम के सारे देश को जहां सोना मिलता है घेरे हुए है। १२ उस देश का सोना चोखा होता है, वहां मोती और सुलैमानी पत्थर भी मिलते हैं। १३ और दूसरी नदी का नाम गीहोन् है, यह वही है जो कूश् के सारे देश को घेरे हुए है। १४ और तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल् है, यह वही है जो अश्शूर् के पूर्व की ओर बहती है। और चौथी नदी का नाम फरात है। १५ जब यहोवा परमेश्वर ने आदम * को लेकर अदन की बाटिका में रख दिया, कि वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे, १६ तब यहोवा परमेश्वर ने आदम * को यह आज्ञा दी, कि तू बाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है : १७ पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा ॥

१८ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम * का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उस से मेल खाए। १९ और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों को रचकर आदम * के पास ले आया कि देखे, कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम * ने रखा वही उसका नाम हो गया। २० सो आदम * ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उस से मेल खा सके। २१ तब यहोवा परमेश्वर ने आदम * को भारी नीन्द में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उस ने उसकी एक पसुली निकालकर उसकी सन्ती मांस भर दिया। २२ और यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो उस ने आदम * में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास

* वा मनुष्य।

† मूल में—बँटके चार सिर।

* वा मनुष्य।

ले आया। २३ और आदम* ने कहा, अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है: सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है। २४ इस कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे। २५ और आदम* और उसकी पत्नी दोनों नङ्गे थे, पर लजाते न थे॥

(मनुष्य के पापी हो जाने का वर्णन)

३ यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त्त था, और उस ने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इसे बाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना? २ स्त्री ने सर्प से कहा, इस बाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं। ३ पर जो वृक्ष बाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे। ४ तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे, ५ वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे। ६ सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उस ने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उस ने भी खाया। ७ तब उन दोनों की आंखें खुल गईं, और उनको मालूम हुआ कि वे नङ्गे हैं; सो उन्हों ने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये। ८ तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय* बाटिका में फिरता था उसका शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी बाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। ९ तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा, तू कहां है? १० उस ने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया क्योंकि मैं नङ्गा था; इसलिये छिप गया। ११ उस ने कहा, किस ने तुझे चिताया कि तू नङ्गा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे बर्जा था, क्या तू ने उसका फल खाया है? १२ आदम ने कहा जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया। १३ तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, तू ने यह क्या किया है? स्त्री ने कहा, सर्प ने मुझे बहका दिया तब मैं ने खाया। १४ तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, तू ने जो यह किया है इसलिये तू सब घरेलू पशुओं, और सब बनैले पशुओं से अधिक शापित है; तू पेट के बल चला करेगा, और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा: १५ और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा। १६ फिर स्त्री से उस ने कहा, मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊंगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे

* वा मनुष्य।

* मूल में—दिन की वायु में।

पति की ओर होगी, और वह तुझ पर
प्रभुता करेगा। १७ और आदम से उस ने
कहा, तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी,
और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने
तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना
उसको तू ने खाया है, इसलिये भूमि तेरे
कारण शापित है; तू उसकी उपज जीवन
भर दुःख के साथ खाया करेगा: १८ और
वह तेरे लिये कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी,
और तू खेत की उपज खाएगा; १९ और
अपने माथे के पसीने की रोटी खाया
करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल
जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला
गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में
फिर मिल जाएगा। २० और आदम ने
अपनी पत्नी का नाम हव्वा* रखा;
क्योंकि जितने मनुष्य जीवित हैं उन सब की
आदिमाता वही हुई। २१ और यहोवा
परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के
लिये चमड़े के अंगरखे बनाकर उनको
पहिना दिए।

२२ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा,
मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से
एक के समान हो गया है: इसलिये अब
ऐसा न हो, कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन
के वृक्ष का फल भी तोड़ के खा ले और
सदा जीवित रहे। २३ तब यहोवा
परमेश्वर ने उसको अदन की बाटिका में से
निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती
करे जिस में से वह बनाया† गया था।
२४ इसलिये आदम को उस ने निकाल
दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का
पहरा देने के लिये अदन की बाटिका के
पूर्व की ओर करूबों को, और चारों ओर
घूमनेवाली ज्वालामय तलवार को भी
नियुक्त कर दिया।।

(आदम के पुत्रों का वर्णन)

४ जब आदम अपनी पत्नी हव्वा के
पास गया तब उस ने गर्भवती
होकर कैन को जन्म दिया और कहा,
मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरुष
पाया है। २ फिर वह उसके भाई हाबिल
को भी जन्मी, और हाबिल तो भेड़-
बकरियों का चरवाहा बन गया, परन्तु
कैन भूमि की खेती करने वाला किसान
बना। ३ कुछ दिनों के पश्चात् कैन
यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ
भेंट ले आया। ४ और हाबिल भी अपनी
भेड़-बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे
भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी
भेंट चढ़ाई; तब यहोवा ने हाबिल
और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया,
५ परन्तु कैन और उसकी भेंट को उस ने
ग्रहण न किया। तब कैन अति क्रोधित
हुआ, और उसके मुंह पर उदासी छा गई।
६ तब यहोवा ने कैन से कहा, तू क्यों
क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी
क्यों छा गई है? ७ यदि तू भला करे,
तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी?
और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार
पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा
तेरी ओर होगी, और तू उस पर प्रभुता
करेगा। ८ तब कैन ने अपने भाई
हाबिल से कुछ कहा: और जब वे मैदान
में थे, तब कैन ने अपने भाई हाबिल पर
चढ़कर उसे घात किया। ९ तब यहोवा
ने कैन से पूछा, तेरा भाई हाबिल कहां
है? उस ने कहा मालूम नहीं: क्या मैं
अपने भाई का रखवाला हूं? १० उस ने

* अर्थात् जीवन।
† मूल में—लिया।

कहा, तू ने क्या किया है? तेरे भाई का लोहू भूमि में से मेरी ओर चिल्लाकर मेरी दोहाई दे रहा है! ११ इसलिये अब भूमि जिस ने तेरे भाई का लोहू तेरे हाथ से पीने के लिये अपना मुंह खोला है, उसकी ओर से तू शापित है। १२ चाहे तू भूमि पर खेती करे, तौभी उसकी पूरी उपज फिर तुझे न मिलेगी,* और तू पृथ्वी पर बहेतू और भगोड़ा होगा। १३ तब कैन ने यहोवा से कहा, मेरा दण्ड सहने से† बाहर है। १४ देख, तू ने आज के दिन मुझे भूमि पर से निकाला है और मैं तेरी दृष्टि की आड़ में रहूंगा और पृथ्वी पर बहेतू और भगोड़ा रहूंगा; और जो कोई मुझे पाएगा, मुझे घात करेगा। १५ इस कारण यहोवा ने उस से कहा, जो कोई कैन को घात करेगा उस से सात गुणा पलटा लिया जाएगा। और यहोवा ने कैन के लिये एक चिन्ह ठहराया ऐसा न हो कि कोई उसे पाकर मार डाले॥

१६ तब कैन यहोवा के सम्मुख से निकल गया, और नोद् नाम देश में, जो अदन के पूर्व की ओर है, रहने लगा। १७ जब कैन अपनी पत्नी के पास गया तब वह गर्भवती हुई और हनोक को जन्मी, फिर कैन ने एक नगर बसाया और उस नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक रखा। १८ और हनोक से ईराद उत्पन्न हुआ, और ईराद ने महूयाएल को जन्म दिया, और महूयाएल ने मतूशाएल को, और मतूशाएल ने लेमेक को जन्म दिया। १९ और लेमेक ने दो स्त्रियां ब्याह लीं: जिन में से एक का नाम आदा, और दूसरी का सिल्ला है। २० और आदा ने याबाल को जन्म दिया। वह तम्बुओं में रहना और जानवरों का पालन इन दोनों रीतियों का उत्पादक हुआ*। २१ और उसके भाई का नाम यूबाल है: वह वीणा और बांसुरी आदि बाजों के बजाने की सारी रीति का उत्पादक हुआ†। २२ और सिल्ला ने भी तूबल्कैन नाम एक पुत्र को जन्म दिया: वह पीतल और लोहे के सब धारवाले हथियारों का गढ़नेवाला हुआ: और तूबल्कैन की बहिन नामा थी। २३ और लेमेक ने अपनी पत्नियों से कहा,

हे आदा और हे सिल्ला मेरी सुनो;
हे लेमेक की पत्नियों, मेरी बात पर
कान लगाओ:
मैंने एक पुरुष को जो मेरे चोट
लगाता था,
अर्थात् एक जवान को जो मुझे
घायल करता था, घात किया है।
२४ जब कैन का पलटा सातगुणा लिया
जाएगा।
तो लेमेक का सतहत्तरगुणा लिया
जाएगा।

२५ और आदम अपनी पत्नी के पास फिर गया; और उस ने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम यह कह के शेत रखा, कि परमेश्वर ने मेरे लिये हाबिल की सन्ती, जिसको कैन ने घात किया, एक और वंश ठहरा दिया है। २६ और शेत के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उस ने उसका नाम एनोश रखा, उसी

* मूल में—वह तुझे फिर अपना बल न देगी।

† वा मेरा अधर्म क्षमा होने से।

* मूल में—तम्बू में रहनेहारों और ढोरों का पिता हुआ।

† मूल में—वीणा और बांसुरी के सब बजानेवालों का पिता हुआ।

समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे ॥

(आदम की वंशावली)

५ आदम की वंशावली यह है। जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तब अपनी ही स्वरूप में उसको बनाया; २ उस ने नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की और उन्हें आशीष दी, और उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम * रखा। ३ जब आदम एक सौ तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा उसकी समानता में उस ही के स्वरूप के अनुसार एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम शेत रखा। ४ और शेत के जन्म के पश्चात् आदम आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ५ और आदम की कुल अवस्था नौ सौ तीस वर्ष की हुई: तत्पश्चात् वह मर गया ॥

६ जब शेत एक सौ पांच वर्ष का हुआ, तब उस ने एनोश को जन्म दिया। ७ और एनोश के जन्म के पश्चात् शेत आठ सौ सात वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ८ और शेत की कुल अवस्था नौ सौ बारह वर्ष की हुई: तत्पश्चात् वह मर गया ॥

९ जब एनोश नब्बे वर्ष का हुआ, तब उस ने केनान को जन्म दिया। १० और केनान के जन्म के पश्चात् एनोश आठ सौ पन्द्रह वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ११ और एनोश की कुल अवस्था नौ सौ पांच वर्ष की हुई: तत्पश्चात् वह मर गया ॥

१२ जब केनान सत्तर वर्ष का हुआ, तब उस ने महललेल को जन्म दिया। १३ और महललेल के जन्म के पश्चात् केनान आठ सौ चालीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। १४ और केनान की कुल अवस्था नौ सौ दस वर्ष की हुई: तत्पश्चात् वह मर गया ॥

१५ जब महललेल पैंसठ वर्ष का हुआ, तब उस ने येरेद को जन्म दिया। १६ और येरेद के जन्म के पश्चात् महललेल आठ सौ तीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। १७ और महललेल की कुल अवस्था आठ सौ पंचानबे वर्ष की हुई: तत्पश्चात् वह मर गया ॥

१८ जब येरेद एक सौ बासठ वर्ष का हुआ, तब उस ने हनोक को जन्म दिया। १९ और हनोक के जन्म के पश्चात् येरेद आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २० और येरेद की कुल अवस्था नौ सौ बासठ वर्ष की हुई: तत्पश्चात् वह मर गया ॥

२१ जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ, तब उस ने मतूशेलह को जन्म दिया। २२ और मतूशेलह के जन्म के पश्चात् हनोक तीन सौ वर्ष तक परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २३ और हनोक की कुल अवस्था तीन सौ पैंसठ वर्ष की हुई। २४ और हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।

२५ जब मतूशेलह एक सौ सत्तासी वर्ष का हुआ, तब उस ने लेमेक को जन्म दिया। २६ और लेमेक के जन्म के पश्चात् मतूशेलह सात सौ बायसी वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २७ और मतूशेलह की कुल अवस्था

* वा मनुष्य।

समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे ॥

धर्मशास्त्र

अर्थात्

पुराना और नया धर्म नियम

THE BIBLE SOCIETY OF INDIA AND CEYLON
A/1 MAHATMA GANDHI ROAD
BANGALORE 1
1962
PRINTED IN GREAT BRITAIN

भारत-लंका
बाइबल-समिति,
ए/१, महात्मा गांधी मार्ग,
बंगलौर–१.

१३ और महललेल के जन्म के पश्चात् केनान आठ सौ चालीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। १४ और केनान की कुल अवस्था नौ सौ दस वर्ष की हुई: तत्पश्चात् वह मर गया ॥

१५ जब महललेल पैंसठ वर्ष का हुआ, तब उस ने येरेद को जन्म दिया। १६ और येरेद के जन्म के पश्चात् महललेल आठ सौ तीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। १७ और महललेल की कुल अवस्था आठ सौ पंचानबे वर्ष की हुई: तत्पश्चात् वह मर गया ॥

१८ जब येरेद एक सौ बासठ वर्ष का हुआ, तब उस ने हनोक को जन्म दिया। १९ और हनोक के जन्म के पश्चात् येरेद आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २० और येरेद की कुल अवस्था नौ सौ बासठ वर्ष की हुई: तत्पश्चात् वह मर गया ॥

२१ जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ, तब उस ने मतूशेलह को जन्म दिया। २२ और मतूशेलह के जन्म के पश्चात् हनोक तीन सौ वर्ष तक परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २३ और हनोक की कुल अवस्था तीन सौ पैंसठ वर्ष की हुई। २४ और हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।

२५ जब मतूशेलह एक सौ सत्तासी वर्ष का हुआ, तब उस ने लेमेक को जन्म दिया। २६ और लेमेक के जन्म के पश्चात् मतूशेलह सात सौ बायसी वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २७ और मतूशेलह की कुल अवस्था